भाग स – तबला

अध्याय 1.
तबला और उसका विकास

तबले की उत्पत्ति

वर्तमान संगीत जगत में अवनद्ध वाद्यों में सर्वाधिक विशिष्ट तथा महत्त्वपूर्ण स्थान तबले का है। तबले का अन्य अवनद्ध वाद्यों में उत्कृष्ट स्थान होते हुये भी इसकी उत्पत्ति को लेकर कई मत संगीत जगत में व्याप्त हैं। इस अध्याय में विभिन्न मतों का वर्णन करते हुये अपने मत की पुष्टि तार्किक आधार पर करने का प्रयास किया जायेगा।

1. अमीर खुसरों के द्वारा तबला उत्पत्ति किये जाने सम्बन्धी मत :–

वर्तमान में जितनी तबला शास्त्र की पुस्तकें उपलब्ध हैं लगभग सभी का यह मत है कि अमीर खुसरों ने पखावज को काटकर तबले का आविष्कार किया। कुछ पुस्तकों में यह मत भी है कि तबलें का आविष्कार 16 वीं शताब्दी में अमीर खुसरों के काल में हुआ। संगीत जगत में एक मत यह भी प्रचलित है कि तबले का आविष्कार एक वैज्ञानिक खोज है। विज्ञान के अन्तर्गत भौतिक शास्त्र में ध्वनि विज्ञान के अध्ययन के फलस्वरूप यह पाया गया कि एक ढाँचे के अन्दर बायाँ दायाँ होने से उसकी आवाज में मुलायमियत न होकर जोरदारी अधिक विद्यमान थी इस प्रकार पखावज मृदंग को दो भागों में बाँट दिया गया ताकि उस साज से निकलने वाली आवाज मधुर व मुलायम हो जाये। तबला वादक पं0 किशन महाराज एक पुस्तक में लिखते है कि कितने लेखकों का मत है कि ''खब्बे हुसैन'' ढोलकिया जब सुप्रसिद्ध मृदंगवादक श्री कुदऊ सिंह से प्रतिस्पर्धा में पराजित हुये तो कुदऊ सिंह (कुदो सिंह) जी ने तलवार से उंगलियाँ काट ली। इस पर खब्बे हुसैन ने दाहिने को बाँये हाथ से अभ्यास करके बोलों में मुलायमियत पैदा की, जिसे सुनकर कुदो सिंह बहुत प्रसन्न हुये तदुपरान्त खब्बे हुसैन ने ही मृदंग काटकर खड़ा कर दिया और उसका नाम तबला रखा ।

उपर्युक्त मत का प्रचार कब क्यों और कैसे हुआ ? इसका श्रेय ''आचार्य वृहस्पति'' के अनुसार ''मुहम्मद करम इमाम बख्श'' को जाता है। आचार्य वृहस्पति अपनी पुस्तक ''मुसलमान और भारतीय संगीत के द्वितीय संस्करण–1982 (प्र091)'' में लिखा है कि ''तबले और सितार का आविष्कार रंगीले के युग में खुसरों ने किया था। उस युग से पहले इन वाद्यों और इनके वादकों की चर्चा कहीं नहीं है, परन्तु इन वाद्यों के आविष्कार को अमीर खुसरों के मत्थे मढ़ देने का श्रेय भी मुहम्मद करम इमाम को है। मुहम्मद करम इमाम बख्श ने ''तब्ल'' और तबला शब्दों को अलग–अलग वाद्यों के अर्थ में व्यवहार करते हुये उनके आविष्कार और प्रवर्तन का उल्लेख भिन्न–भिन्न संदर्भो में किया है। एक स्थान पर तो उन्होंने 'तब्ल' को ''अरस्तु'' द्वारा ईजाद किया हुआ बताया और दूसरे स्थान पर तब्ल को खुसरों द्वारा आविष्कृत बताया है।

मेरे विचार से अमीर खुसरों कवि होने के कारण स्वयं कब्बाली के आचार्य तो थे ही साथ ही साथ एक चतुर व शिक्षित व्यक्ति भी थे। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनमें से किसी में भी तबला नामक वाद्य का उल्लेख नहीं है। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि जिसने किसी वाद्य का आविष्कार किया हो, उसने स्वयं ही उस वाद्य का ना तो कहीं प्रयोग किया और ना ही किसी ग्रन्थ में उस वाद्य का उल्लेख किया। ऐसा कैसे सम्भव है ? कब्बाली ढोलक प्रधान गायकी है। (यद्यपि आज कहीं कहीं तबले का प्रयोग

भी होने लगा है तथापि मुख्य रूप से कब्बाली के साथ आज भी ढोलक ही बजायी जाती है) अमीर खुसरों से सम्बन्धित जिस 'तबले' की चर्चा की गई है, वह उस काल का युद्ध क्षेत्र में प्रयुक्त ''घौंसा'' या बड़ा नगाड़ा था। इससे पूर्व भी अरब, फारस, तुर्की आदि मुस्लिम देशों में भी विभिन्न अवनद्ध वाद्यों को तब्ल शब्द से ही संकेत दिया जाता था परन्तु उनमें से किसी भी वाद्य का स्वरूप भारतीय तबले जैसा नहीं था। यह तथ्य पुनः ध्यातत्त्व है कि अमीर खुसरों के लगभग तीन सौ वर्ष बाद तक भी ''तबल'' शब्द का उल्लेख युद्ध के नगाड़े के रुप में किया जाता रहा है जिसका सन्दर्भ उनके परवर्ती साहित्य सिखों के गुरु ग्रन्थ साहब (सन् 1469 से 1538 ई0) में और मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत (1521 से 1541) से प्राप्त होता है।

तबल बाज बीचार सबदि सुवाइयां

(गुरु ग्रन्थ साहिब बार मासः म0–1:पृ 142)

जब राजा चन्द्र हंस और मलिक मुरीद के मध्य द्वन्द्व युद्ध हुआ था तब युद्ध का वर्णन ''तबल'' वाद्य को बजाकर किया गया था ।

सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने 16वीं शताब्दी में पद्मावत में 'तबल' का उल्लेख कुछ निम्न चौपाइयों में किया है। यथा :

'' बाजे तबल, अबूत जुझाऊ।
चढ़ा कोपि सब राजा राऊ।। (5/213)

उ0 अमीर खुसरों से सम्बन्धित एक और अन्य मत प्रचलित है कि अठ्ठारहवीं शताब्दी के उ0 अमीर खुसरों द्वितीय जो स्वयं बीन वादक थे, ने आविष्कार किया। इन्हें खुसरों खाँ उपनाम से भी जाना जाता है।

कुछ विद्वानों का मत है कि मुहम्मद शाह रंगीले के काल (18वीं शताब्दी) में अमीर खुसरों ने तबले का आविष्कार किया। इस सन्दर्भ में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि ये अमीर खुसरों कब्बाली के आचार्य हजरत अमीर खुसरों नहीं थे अपितु नाम की समानता के कारण सम्भवतः यह भ्रमात्मक धारणा प्रचार मे आई कि तबले के आविष्कारक हजरत अमीर खुसरों थे। जिनका काल ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार 1300 शताब्दी प्राप्त होता है।

मेरे विचार से इस भ्रान्त मत के प्रचार का श्रेय 19 वीं शताब्दी के उन अशिक्षित तबला कलाकारों को है, जिन्होंने अपने वाद्य की महत्ता स्थापित करने के लिए अमीर खुसरों जैसे विद्वान व्यक्ति के साथ तबला उत्पत्ति की कथा को जोड़ दिया। साथ ही उन्होंने संस्कृत भाषा को न जानने के कारण पूर्व के संगीत शास्त्र के ग्रन्थों का अध्ययन नहीं किया था तथा अपने काल के लोकप्रिय वाद्य तबला के महत्त्व को बढ़ाने के विचार व उद्देश्य से इसकी उत्पत्ति को अमीर खुसरों जैसे लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ जोड़ दिया, जो वस्तुतः कपोलकल्पित कथा के समान अर्थहीन प्रतीत होता है।

2. सुधार खाँ द्वारा तबला उत्पत्ति किये जाने सम्बन्धी मतः

वर्तमान जगत में तबले की उत्पत्ति के सन्दर्भ में यह मत भी सर्वाधिक प्रचलित है कि तबले का आविष्कार सुधार खाँ ने किया।

रागदर्पण में तानसेन के संगतकार भगवान पखावजी तथा सुधार खाँ की प्रतियोगिता का उल्लेख किया है। जिसमें भगवान पखावजी के सन्दर्भ में उल्लिखित है कि वह 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राग दर्पण के लेखक फकीरूल्लाह सैफ खान के समय सौ वर्ष की आयु में जीवित थे। अब यदि प्रतियोगिता का सम्बन्ध उनके यौवन काल से लगाया जाये तो सुधार खाँ का समय लगभग 16 वीं शताब्दी के आस पास मानना उचित होगा।

राग दर्पण व चिरंजीत के अनुसार सुधार खाँ ढ़ाढी का समय 16 वीं शताब्दी था। किन्तु ऐतिहासिक अध्ययन के फलस्वरूप ज्ञात होता है कि 16 वीं से उन्तीसवीं शताब्दी तक मुगल बादशाहों में अकबर शाहजहाँ, मुहम्मद शाह रंगीले, अहमदशाह आलमगीर सानी, शाह आलम, अकबर (द्वितीय) और बहादुर शाह जफर तक लगभग बारह पीढ़ियाँ आयी जबकि उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक दिल्ली के तबला वादकों में सुधार खाँ की चौथी पीढ़ी का होना ही निश्चित किया गया।

इस आधार पर सुधार खां सोलहवीं शताब्दी मानना तर्कोचित नहीं है और न ही उन्नीसवीं शताब्दी मानना तर्क सम्मत है क्योंकि एक शताब्दी में चार पीढ़ियाँ होना असम्भव है।

3. खब्बे हुसेन ढोलाकिया द्वारा तबला उत्पत्ति किए जाने सम्बन्धी मतः

कुछ विद्वान खब्बे हुसैन खाँ ढोलकिया को तबले का आविष्कारक मानते है। ताल प्रकाश पुस्तक की भूमिका में श्री किशन महाराज ने खब्बे हुसैन खाँ को ही तबले का अविष्कारक बताया है। 'मुसलमान और भारतीय संगीत में भी मुहम्मद शाह रंगीले के शासन काल में हुसैन खाँ ढोलकिए का सन्दर्भ आया है।

'मादनुल मूसीकी' में मुहम्मद करम इमाम ने भी उल्लिखित किया है कि ''हुसैन खाँ नामक सुप्रसिद्ध ढोलकिया और भवानीदास पखावजी में, अपने–अपने वाद्यों की श्रेष्ठता के बारें में प्रतिस्पर्धा हुई थी।

कई विद्वानों ने उपयुर्क्त प्रतियोगिता के फलस्वरूप लिखा है कि खब्बे हुसैन खाँ के परास्त होने पर ढोलक को काटकर तबला बनाया गया।

'खब्बे हुसैन' ढोलकिया का तबले की उत्पत्ति से जोड़ना इस मत की पुष्टि तो करता है कि तबले के विकास में ढोलक का भी महत्त्वपूर्ण योग दान रहा है किन्तु तबले की उत्पत्ति से जोड़ने के लिए हमारे समक्ष कोई प्रामाणिक लक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं।

अब प्रश्न उठता है कि यदि तबला प्राचीन वाद्य है तो वह किसी प्राचीन वाद्य का परिवर्तित या परिष्कृत रूप है। या वह किसी अन्य नाम से लोक में प्रचलित था ?

अनेक स्थानों पर प्राचीन गुफाओं में प्राप्त प्रस्तर शिल्पों के साक्ष्य से ज्ञात होता है कि वर्तमान तबले के स्वरूप के समान जोड़ी वाद्यों का प्राचीन काल में प्रचलन था। अतः तबले के उद्‌भव की खोज हेतु संक्षेप में अवनद्ध वाद्यों के इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी।

नाट्‌य शास्त्र के अनुसार सभी अवनद्ध वाद्यों में ''त्रिपुष्कर'' सर्वाधिक उन्नत वाद्य है। इस सन्दर्भ में एक कथा प्रचलित है कि स्वाति मुनि को वर्षा ऋतु में कमल के पत्तों पर गिरती बूंदो की ध्वनि से पुष्कर वाध के आविष्कार को प्रेरणा मिली। त्रिपुष्कर वाद्य से भी प्राचीन वाद्य दुन्दुभि है। अतः भरत मुनि ने प्रेरणा स्वरूप जिस पुष्कर वाद्य की रचना की, उसके निर्माण में दुन्दुभि के तत्कालीन स्वरूप का समावेश अवश्य किया गया होगा, क्योंकि लोक में जिस वाद्य का प्रचलन हो, दूसरे वाद्य के आविष्कार में उसका प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है अतः दुन्दुभि को आधार मानकर ही आचार्य भरत ने त्रिपुष्कर वाद्य की रचना की।

दुन्दुभि उर्ध्वमुखी वाद्य है। इसी कारण भरत में भी त्रिपुष्कर की रचना में सर्वप्रथम उर्ध्वमुखी वाद्य की रचना की होगी। तदुपरान्त उससे लगा भाग आलिंग्यक और फिर गोद में रखकर बजाये जाने वाला भाग आंकिक बनाया होगा।

अमरकोष की क्षीर स्वामी कृत ग्यारहवीं शताब्दी की ''अमरकोषोद्‌घाटन टीका''[1] और नारदकृत ''संगीतमकरन्द''[2] ग्रन्थ में त्रिपुष्कर के आंकिक, उर्ध्वक व आलिंग्यक भागों की आकृतियाँ तथा वादक के सम्मुख उन्हें रखे जाने की स्थिति क्रमशः इस प्रकार बतायी गयी है।

''हरीतक्या कृतिस्त्वङ़. क्यो यवमध्यस्तयोर्ध्वक : ।।
आलिड़.ग्यश्चैव गोपुच्छो मध्यदक्षिणवामगा : ।।

अर्थात् आंकिक की आकृति हरीतिका– उर्ध्वका की आकृति यवमध्य और आलिंग्य की आकृति गोपुच्छ के सदृश्य होती है। वादक के सामने (बीच में) आंकिक, दायी तरफ उर्ध्वक तथा बांयी ओर आलिंग्य रहता है।

अब हम त्रिपुष्कर के उर्ध्वमुखी व आंलिग्यक भाग के स्वरूप को वर्तमान तबला वाद्य के स्वरूप से मिलायेंगे तो देखेंगे कि निश्चित रूप से तबला त्रिपुष्कर के इन्हीं दो भागों का परिष्कृत रूप है।

उपरोक्त तथ्य का प्रतिपादन निम्न सांक्ष्यों के आधार पर करना श्रेयस्कर होगा। सातवीं से नवी शताब्दी तक के प्राप्त चित्रों में उर्ध्वमुखी व त्रिपुष्कर वाद्य का प्रचलन था। नवीं से तेरहवीं शताब्दी तक आंकिक वाद्य का प्रचार धीरे–धीरे विकसित हुआ।

तेरहवीं शताब्दी के बाद ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के द्वारा ध्रुपद गायकी में संगीत वाद्य के रूप में पखावज लोक में चरम सीमा तक प्रचारित हुआ।

दूसरी तरफ तेरहवीं शताब्दी से ही कब्बाली के आचार्य अमीर खुसरों के द्वारा ढोलक प्रचार में आयी थी। अवनद्ध वाद्य लगभग अट्ठारहवीं शताब्दी तक उन्नत अवनद्ध वादी के रूप में प्रतिष्ठित रहे और इस काल में उर्ध्वमुखी अवनद्ध वादियों का प्रचार नहीं के बराबर था क्योकि इन वाद्यों को प्रस्तरशिल्पों में अंकन अपवाद स्वरूप है ।

चित्र सं. 1 इस चित्र में उर्ध्वक आंलिग्य का मुख चौडा है और वर्तमान तबले से सामयता के आधर पर आज के तबले के समान उसमें बद्धियॉ भी लगी है तथा बजाने की क्रिया में हाथ का रखाव भी तबले को बजाने के समान है ।

द्विपुष्कर वादक की अनुकृति (दसवीं शताब्दी, कल्लाबाड़ी, ढाका)

1. **अमरकोषोद्घाटन नाट्यवर्ग : प्रथम काण्ड, श्लोक सं. 5 की टीका**
2. **संगीत मकरन्द : संगीताध्याय : चतुर्थवादः श्लोक सं. 10 व 11**
1. चित्र 1 तबले का उद्ग विकास और वादन शैलियो से साभार उद्त चित्र –24

चित्र 2 : इस चित्र में पूर्व चित्र के समान ही बजाने की क्रिया की जा रही है। पर पखावज अंग से वादन तथा एक पर तबले के अंग (बन्द बोलों) से वादन किया जा रहा है। इसमें पूर्व चित्र के विपरीत आलिंग्यक का मुख उर्ध्वक से कुछ चौड़ा है तथा इसमें बद्धियाँ तो परिलक्षित है ही अपितु उर्ध्वक के नीचे आज के

तबले के समान इडुरी स्पष्ट दिखाई दे रही है। (प्र0 सं. अ)

द्विपुष्कर वादक की अनुकृति (दसवीं शताब्दी, भुवनेश्वर)

चित्र 3 : इस चित्र मे ंबद्धियाँ तो ही है ओर इसमें वादक ऐसा प्रतीत होता है जैसे धिर धिर का बोल बजा रहा हो। इस जोड़ी में दोनों अंगों में नीचे इडुरी स्पष्ट दिखाई दे रही है।

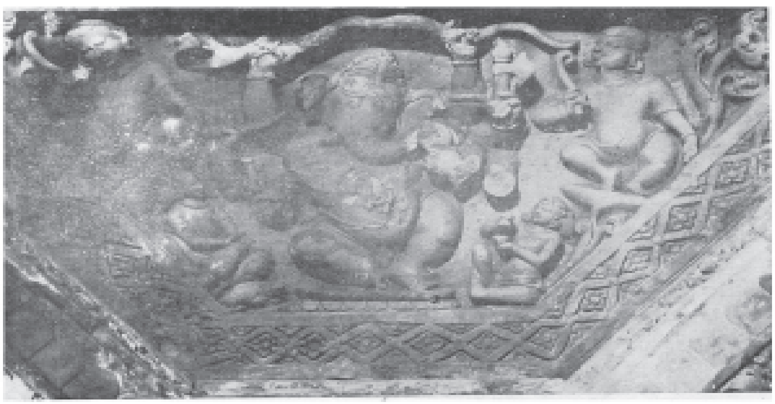

नृत्यरत गणेश के साथ द्विपुष्कर वादक की अनुकृति (दसवीं शताब्दी, भुवनेश्वर)

1. चित्र 2 तबले का उद्गम विकास और वादन शैलियो से साभार उद्घृत चित्र–25
2. चित्र 3 तबले का उद्गम विकास और वादन शैलियो से साभार उद्घृत चित्र–26

सत्रहवीं शताब्दी से पुनः यह उर्ध्वमुखी वाद्य प्रचार में आया और इसे जोड़ी वाद्य भी कहा जाने लगा। यह जोड़ी शब्द लोक भाषा का परिचायक प्रतीत होता है। क्योंकि ग्यारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक यह वाद्य अवश्य ही लोक वाद्य रहा होगा तभी तो इस तथ्य की पुष्टि हेतु सत्रहवी शताब्दी में संगीत जगत का महत्त्वपूर्ण वाद्य बना। अतः यह वाद्य लुप्त नहीं हुआ।

इस तथ्य के प्रमाण स्वरूप निम्न चित्र प्रस्तुत है।

चित्र 4 : यह चित्र सत्रहवीं शताब्दी का है जो दिल्ली से प्राप्त किया गया। इस चित्र में जोड़ी वाद्यको कमर में बाँधकर सफलतापूर्वक बजाया जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है ।

तबलावादिका की अनुकृति (सत्रहवीं शताब्दी, दिल्ली)

चित्र 4 – तबले का उद्गम विकास ओ. वादन शैलियों से साभार उद्घृत– चित्र 31

चित्र संख्या 5 यह चित्र 18वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध का है इस चित्र को देखकर वर्तमान तबले से काफी समानता प्रतीत होती है । इस चित्र में दोनों अंगो की उँचाई चौडाई समान प्रतीत हो रही है। बद्धी स्याही लगी है तथा बाये भाग में आटा लगा प्रतीत हो रहा है जो आज भी पंजाब में देखा जा सकता है । बजाने की शैली बिल्कुल तबले जैसी है इसमें दाये अंग में गटटे लगे होने का भी आभास हो रहा है अन्तर केवल मात्रा वादन क्रिया की बैठक का है ।

तबलावादिका की अनुकृति (अठारहवीं शताब्दी, पूर्वार्ध, दिल्ली)

चित्र 6 : यह चित्र अट्‌ठारहवीं शताब्दी में जम्मू से प्राप्त किया गया है। इस चित्र में जोड़ी वाद्यों को कमर में बाँधकर नृत्य की संगति के साथ बजाया जा रहा है। इनमें गजरे, बद्धियाँ तथा बाँये का मुख दाहिने तबले से बड़ा, वर्तमान तबले के स्वरूप के समान हैं इसके अतिरिक्त दाहिने तबले पर स्याही लगी होने का भी आभास हो रहा है।

तबलावादक की अनुकृति (अठारहवीं शताब्दी, जम्मू)

चित्र 6 –तबले का उद्‌गम विकास ओ. वादन शैलियों से साभार उद्‌धृत– चित्र 35

चित्र 7 : यह चित्र प्रारम्भिक कांगडा, कलम, पहाड़ी. रौली, गुलेर का है। इस चित्र में कृष्ण की होली लीला का चित्र वर्णित है। चित्र वादक लीला के साथ जोड़ी वाद्यों को कमर पर बाँधकर वादन कर रहा है इस चित्र में उपरोक्त चित्रों से अन्तर बस यह है कि दोनों मुखों की चौड़ाई समान तथा अधिक है।

मृदंग

मृदंग के नाम के सन्दर्भ में भ्राँन्ति व्याप्त है। कुछ लोग पखावज और मृदंग को एक ही वाद्य के दो नाम मानते है। किन्तु मेरे मत में मृदंग दक्षिण भारतीय संगीत में प्रयुक्त होने वाला वाद्य है तथा पखावज उत्तर भारतीय संगीत में प्रयुक्त होने वाला वाद्य है।

तबला व उर्ध्वक जोड़ी वाद्यों में गट्‌टे का साम्य नहीं है, प्राचीन अवनद्ध वाद्यों में स्वर में मिलाने के लिए मृत्ति कालेपन संस्कार विधि थी। धीरे–धीरे प्रचार में अधिक आने पर दाहिने अंग को भिन्न–भिन्न स्वरों में मिलाने की आवश्यकता ने छल्लों, सूत का कपड़ा आदि का जन्म दिया होगा जो आज पखावज और ढोलक को देखने से स्पष्ट हो जाता है। इसलिए मध्यकालीन तबले में गट्‌टों का प्रयोग दिखाई पड़ता है यद्यपि आज भी बाँये में गट्‌टों का प्रयोग नहीं होता है। फिर भी बनारसी बाँये तबले में धातु के छल्लों का प्रयोग तो दिखाई देता ही है।

किसी भी वाद्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रामाणिकता सिद्ध करने हेतु हम तीन आधारों पर ही अध्ययन कर सकते हैं।

तबलावादक की अनुकृति (अठारहवीं शताब्दी, काँगड़ा कलम)

चित्र 7 —तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियों से साभार उद्‌घृत— चित्र 36

1. किवदन्तियों के आधार पर
2 प्रस्तर शिल्पों से प्राप्त चित्रों के आधार पर
3. शास्त्रगत आधार पर ।

किवदन्तियों का आधार तो मौखिक रूप में चलता है इसी कारण उसमें कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्यम्भावी है। अतः सत्यता संदेहास्पद भी हो सकती है।

प्रस्तर शिल्प व शास्त्र का प्रमाण ठोस होता है भले ही ग्रन्थकार या वास्तुकार निश्चित समय बाद इस संसार से विदा हो जाता है किन्तु उस शास्त्र द्वारा रचित कृति इसी संसार में विद्यमान रहती है जिसको पढ़कर व देखकर ही उस व्यक्ति या उस काल की ठोस जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

अतः तबले की उत्पत्ति तथा विकास त्रिपुष्कर वाद्य से ही हुआ है। क्योंकि कला के क्षेत्र में विज्ञान की भाँति कोई भी आविष्कार अचानक नहीं होता है। कला के क्षेत्र में 'आविष्कार' शब्द से तात्पर्य है किसी भी चीज का पूर्वावस्था से विकसित अवस्था में आना। क्योंकि किसी भी कला का परिष्करण तभी सम्भव है जब वह लोक में विद्यमान रही हो।

तबले का निर्माण त्रिपुष्कर के दो उर्ध्वमुखी भाग उर्ध्वक तथा आंलिंग्यक से प्रेरणा प्राप्त कर किया गया होगा। जिसका ठोस प्रमाण संगीत शास्त्र ग्रन्थों में प्रस्तर शिल्पों में तथा भित्ति चित्रों में प्राप्त होता है।

मृदंग आदि काल में 'पुष्कर' वाद्य को भी कहा जाता था। पुष्कर वाद्य में चमड़े से मढ़े तीन मुख होते थे। दो मुख बाई और दाहिनी ओर तथा शेष तीसरा मुख ऊपर आकाश की तरफ को रहता था। इस

वाद्य का वर्णन भरत के नाट्यशास्त्र में वर्णित है। पुष्कर का जो मुख उपर की तरफ रहता था। वह मिट्टी से बनाया जाता था। इस कारण ही इस वाद्य का नाम मृदंग पड़ा।

मृदंग का काठ तमिल में बेड़ या पनस की लकड़ी में बनाया जाता है। काठ की लम्बाई 15¾ इंच रखी जाती है लकड़ी की मोटाई आधा अंगुल रखी जाती है दोनों तरफ के मुख चमड़े से मढ़े जाते थे। चमड़े के घेरे में 24 छिद्र रहते थे और हर छिद्र के बीच में 1 अंगुल की दूरी रखी जाती थी। पूड़ी को काठ पर जमा कर रखने के लिए छिद्रों में से चमड़े की बद्दी से दोनों पूडियां को कस कर बाँध दिया जाता है। बद्दी के बन्धन को ढीला करने या कसने से मृदंग के स्वर को उतारा या चढ़ाया जाता था। पूड़ियों के मध्य में चावल को अपामार्ग के भस्म के साथ मिलाकर लगाया जाता था उस लेप को वोहण कहते है। संगीत रत्नाकर में उल्लिखित है कि बाँये तरफ की पूड़ी पर लेप की मोटी तह व दाहिनी तरफ की पूड़ी में लेप की बाँये की तुलना में थोड़ी कम मोटी तह लगाते हैं। वर्तमान समय में बाये हाथ की पूड़ी को खाली रखा जाता है और वादन करने से कुछ समय पूर्व गुंदा आटा छोटे गोले की आकृति में लगाया जाता है। और दाहिने मुख में मृदंग बनाते समय ही लकड़ी का कोयला, पकाया हुआ चावल, गोंद–इनको मिलाकर तीन इंच के व्यास में गोलाकार लगाते हैं। मृदंग रक्तचन्दन और कही कहीं आबनूस की लकड़ी के बनायें जाती है, ऐसे मृदंग की लकड़ी की मोटाई 1 अंगुल या ¾ इंच रहनी चाहिए तथा कुल लकड़ी की लम्बाई तीस अंगुल रहती है। दाहिना मुख 11½ अंगुल और बायाँ 12 अंगुल व्यास का रहता है।

तबला तथा मृदंग में समानता :

1. संगीत का प्रामाणिक ग्रन्थ (भरत कृत) नाट्य शास्त्र के अनुसार तबला तथा मृदंग दोनों ही की उत्पत्ति त्रिपुष्कर वाद्य से हुई है।
2. मृदंग तथा तबला दोनों वाद्य, वाद्यों के वर्गीकरण के अनुसार अवनद्ध वाद्य की श्रेणी में आते हैं क्योंकि दोनों ही वाद्यों के मुख चमड़े की पुडी द्वारा बन्द किये जाते हैं।
3. तबला तथा मृदंग दोनों वाद्यों में पुड़ी के मध्य में स्याही लगाने का विधान है पहले मृदंग में दाँये भाग में व बाँये भाग में स्याही लगती किन्तु वर्तमान में दाहिने में ही स्याही लगायी जाती है।
4. दोनों वाद्यों में दाहिने भाग को ही स्वर में मिलाया जाता है।
5. तबला तथा मृदंग दोनों में बाँये भाग को स्वर में नहीं मिलाते हैं।
6. तबला तथा मृदंग दोनों का वादन करते समय कलाकार की बैठक पद्मासन में ही होती है।
7. दो अवनद्ध वाद्यों (तबला तथा मृदंग) से सोलो वादन किया जाता है। तथा दोनों ही वाद्यों द्वारा संगति भी की जाती है।
8. दोनों वाद्यों के दाहिने भाग में लकड़ी के गट्टे लगाये जाते है।

मृदंग तथा तबले में असमानता :

1. तबला दो भागों में विभक्त होता है। जबकि मृदंग का आकार एक बेलन की तरह होता है, जिसके दोनों तरफ पूड़ी चढी रहती है जबकि तबले के ऊपर की तरफ पूड़ी लगी रहती है और नीचे का भाग बन्द रहता है।
2. तबले में बाँये भाग में पूड़ी के बीच में स्याही लगती है जबकि मृदंग में बाँयी तरफ स्याही नहीं लगती अपितु बजाने के कुछ समय पूर्व आटा (गुंदा हुआ) स्याही के आकार में लगाया जाता है।
3. तबले के वादन में बन्द बोलों की प्रधानता रहती है जबकि मृदंग खुले बोलों से बजाया जाता है।
4. तबले के मूल वर्ण 10 है। किन्तु मृदंग में दाहिने मुख में तद्धि, थे, टें, हें, नं, दें तथा बाँये मुख में त,ट,ह्र,द ध,ल है।
5. मृदंग के वादन में 5 प्रकार के आघात बतायें गये है। समपाणि, अर्घपानिप्रहत, पार्श्वपाणि, प्रदेशिनी। जबकि तबले में ऐसे कोई भी आधातों का वर्णन नहीं हैं।

अध्याय 2

ताल का विवरण

त्रिताल–

त्रिताल को तीनताल भी कहते है। इसमें 16 मात्रायें होती हैं। 4.4 मात्रा के 4 विभाग, 3 ताली व एक खाली होती है। पहली ताली 1मात्रा पर , 5 वी तथा 13 वीं मात्रा पर ताली व 9 वी मात्रा खाली होती है।

ठेका

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा
×				2			
9.	10.	11.	12.	13.	14.	15.	16.
धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
0				3			

दुगुन

धा धिं धिं धा	धा धिं	धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं	धिं धा
×			2		
धा धिं धिं धा	धा धिं	धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं	धिं धा
0			3		

चौगुन

धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
×			
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
2			
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
0			
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
3			

दादरा

इस ताल में 6 मात्रा, 2 विभाग , (3–3 मात्रा के) 1 ताली व 1खाली होती है।

ठेका

1	2	3	4	5	6
धा	धी	ना	धा	तू	ना
×				0	

दुगुन

1	2	3	4	5	6	
धा धी	ना धा	तू ना	धा धी	ना धा	तू ना	धा
×			0			×

चौगुन

1	2	3	4	5	6
धाधीनाधा	तूनाधाधी	नाधातूना	धाधीनाधा	तूनाधाधी	नाधातूना
×			0		

दादरा के प्रकार

(1)

धा	तित्	तित्	तक	धिं	धिं
×			0		

(2)

धा	तिन	नक	ता	तिन	नक
×			0		

रूपक

इस ताल में 7 मात्रा, 3 विभाग (3, 2, 2 मात्रा) होते हैं। पहली ताली 4 मात्रा पर व दूसरी ताली छठी मात्रा पर व खाली पहली मात्रा पर है।

ताल सिद्धान्त के अनुसार पहली मात्रा सम है पर इस ताल में खाली सम पर है अतः पहली मात्रा का चिन्ह × इस प्रकार लगायेंगे।

ठेका

1	2	3	4	5	6	7
तीं	तीं	ना	धीं	ना	धीं	ना
×			2		3	

दुगुन

तीं तीं	ना धीं	ना धीं	नातीं	तीं ना	धीं ना	धीं ना	ती
(×)			2		3		(×)

चौगुन

तीं तीं ना धीं	ना धीं ना तीं	तीं ना धीं ना	
(×)			
धीं ना तीं तीं	न धीं ना धीं	ना तीं तीं ना	धी ना धी ना
2		3	

कहरवा

इस ताल में 8 मात्रा, 2 विभाग (4–4 मात्रा के) होते है। एक ताली व एक खाली होती है। पहली मात्रा पर ताली व 5 वीं मात्रा पर खाली होती हैं

ठेका

1	2	3	4	|	5	6	7	8
धा	गे	ना	ती	|	न	क	धी	ना
×				|	0			

दुगुन

धागे	नाती	नक	धीना	|	धागे	नाती	नक	धीना	|	धा
×				|	0				|	(×)

चौगुन

धा गे ना ती	न क धी ना	धा गे ना ती	न क धी ना		
×					
धा गे ना ती	न क धी ना	धा गे ना ती	न क धी ना	|	धा
0				|	×

प्रकार

(1)

धित्	ता	ना	ना	|	तित	ता	धा	धा
×				|	0			

(2)

धा		ति	नक	धिं	|	धा	तिं	नक	धिं.
×					|	0			

झूमरा

इस ताल में 14 मात्रायें होती हैं। इसमें 4 विभाग (3–4–3–4 मात्रा) होते हैं। 3 ताली व एक खाली होती है। पहली ताली 1 मात्रा पर, दूसरी ताली 4 मात्रा पर व तीसरी ताली 11वीं मात्रा पर होती है तथा खाली 8वीं मात्रा पर होती है।

ठेका

1	2	3	|	4	5	6	7
धिं	ऽधा	तिरकिट	|	धि.	धिं	धागे	तिरकिट
×			|	2			
8	9	10	|	11	12	13	14
ति	ऽ ता	तिरकिट	|	धिं	धिं	धागे	तिरकिट
0			|	3			

दुगुन

धिं ऽधा तिरकिट धिं धिं धागे | तिरकिट तिं ऽता तिरकिट धिं धिं
× | 2

धागे तिरकिट | धिं ऽधा तिराकिट धिं धिं धागे | तिरकिट तिं
| 0 | 3

ऽता तिराकिट धिं धिं धागे तिरकिट | धिं

चौगुन

धिं ऽधा तिरकिट धिं धि धागे तिरकिट तिं ऽता तिरकिट धिं धिं

धागे तिरकिट धिं ऽधा | तिरकिट धिं धिं धागे तिरकिट तिं ऽता तिरकिट

2

धिं धिं धागे तिरकिट | धिं ऽधा तिरकिटधिं धिं धागे तिरकिट तिं

0

ऽता तिरकिट धिं धिं | धागे तिरकिट धिं ऽधा तिरकिट धिं धिं धागे

3

तिरकिट तिं ऽता तिरकिट धिं धिं धागे तिरकिट | धिं

×

एकताल

यह ताल 12 मात्रा की होती है। इसमें 6 विभाग (2–2 मात्रा) होते हैं इसमें 4 ताली व 2 खाली होती है। पहली ताली 1 मात्रा पर, दूसरी 5 मात्रा पर, तीसरी 9 मात्रा पर व चौथी ताली 11 मात्राा पर लगती है। पहली खाली 3 मात्रा पर व दूसरी खाली 7 मात्रा पर लगती है।

ठेका

धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	क त्ता	धागे तिरकिट	धी ना
×	0	2	0	3	4

दुगुन

धिं धिं धागे तिरकिट	तू ना क त्ता	धागे तिरकिट
×	0	2

धी ना	धिं धिं धागे तिरकिट	तू ना कत्ता	धागे तिरकिट धीना
	0	3	4

चौगुन

धिं धिं धागे तिरकिट तू ना कत्ता | धागे तिरकिट धी ना

× | 0

धिं धिं धागे तिरकिट | तू ना कत्ता धागे तिरकिट धी ना

2

धिं धिं धागे तिरकिट तू ना कत्ता | धागे तिरकिट धी ना

0 | 3

धिं धिं धागे तिरकिट | तूना कत्ता धागे तिरकिट धी ना

4

चौताल

यह खुले बोल (पखावज) की ताल है। इसमें 12 मात्राएँ होती हैं। इसमें 6 विभाग (2–2 मात्र) होते हैं। इसमें 4 ताली व 2 खाली होती हैं पहली ताली 1 मात्रा पर, दूसरी 5 मात्रा पर, तीसरी 9 मात्रा पर व चौथी ताली 11 मात्रा पर लगती है। पहली खाली 2 मात्रा पर दूसरी खाली 7 मात्रा पर लगती है।

ठेका

धा धा	दिं ता	किट धा	दिं ता	तिट कत
×	0	2	0	3
गदि गन				
4				

दुगुन

धा धा दिं ता	किट धा दिं ता	तिटकत गदि गन	धाधा दिंता
×	0	2	0
किट धा दिं ता	तिटकत गदि गन	धा	
3	4		

चौगुन

धा धा दिं ता किट धा दिंता	तिटकत गदि गिन धा धा दिंता
×	0
किट धां दिंता तिरकत गदि गन	धा धा दिंता किट धा दिंता
2	0
तिट कत गदि गन धा धा दिं ता	किट धा दिंता तिट कत गदि गन
3	4

तिलवाड़ा

यह ताला 16 मात्रा की होती है। इसमें 4 विभाग (4–4 मात्रा) होते हैं। 3 ताली व एक खाली होती है। पहली ताली सम पर दूसरी ताली 5 मात्रा पर व तीसरी ताली 13 मात्रा पर लगती है जबकि खाली 9 मात्रा पर होती है।

ठेका

धा तिरकिट धिं धि	धा धा तिं तिं
×	2
ता तिरकिट धिं धिं	धा धा धिं धिं
0	3

दुगुन

धा तिरकिट धिं धिं धा धा तिं तिं	
×	
ता तिरकिट धिं धिं धा धा धिं धिं	
2	
धा तिरकिट धिं धिं धा धा तिं तिं	
0	
ता तिरकिट धिं धिं धा धा धिं धिं	धा
3	×

चौगुन

धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ता तिरकिट धिं धिं	धा धा धिं धिं	×
धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ता तिरकिट धिं धिं	धा धा धिं धिं	2
धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ता तिरकिट धिं धिं	धा धा धिं धिं	0
धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ता ति किट धिं धिं	धा धा धिं धिं	3

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1 तबल – तबला
2 तब्ल – तबला
3 ठेका – ताल के बोल
4 दुगुन – एक मात्रा में दो मात्रा
5 चौगुन – एक मात्रा में चार मात्रा
6 सम –ताल की पहली मात्रा सम चिन्ह
7 खाली – हाथ को बिना ताली लगाये एक तरफ उठाकर गिनने की क्रिया चिन्ह 0
8 ताली – ताल के ठेके में लगने वाली ताली की संख्या चिन्ह 2,3,4 आदि
9 मुखड़ा – कुछ बोल बजाकर सम पर आने की क्रिया।
10 कायदा – ठेके की रचना के अनुसार रचे गये बोल ।
11 तिहाई – धा सहित बोलो का वह समूह जो एक समान तीन बार बजाया जाये।
12 लय –दो क्रियाओं के बीच का अन्तराल समान
13 विलम्बित लय – मध्य लय के ठीक दुगुनी धीमी गति
14 मध्य लय – वह लय जो न ज्यादा तेज हो और न ज्यादा धीमी
15 द्रुत लय– मध्य लय की ठीक दुगुनी तेज गति

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. अपने पाठ्यक्रम की 16 मात्रा की तालों के नाम व ठेके लिंखो।
2. अपने पाठ्यक्रम के 12 मात्रा की तालों की दुगुन व चौगुन लिखो।

लघु उत्तरीय

1. झूमरा ताल की ठाह दुगुन चौगुन लिपिबद्ध करके लिखों
2. रूपक की ठाह दुगुन चौगुन लिपिबद्ध करों।

अति लघु उत्तरीय

1. तीन ताल में कितनी मात्रा होती हैं। सही का चिन्ह् लगावें।
   (क) 12 (ख) 14 (ग) 15 (घ) 16
2. रूपक में खाली कौनसी मात्रा पर होती है?
   (क) 4 (ख) 6 (ग) 3 (घ) 1

अध्याय–3

विविध तालों की वादन सामग्री

तीन ताल मुखडे

(1)

धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा
×	2
धा तिं तिं ता	धाती धाधा तीधा धाती
0	3

(2)

धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा
×	2
धा तिं तिं ता	तिट धाति टधा तिट
0	3

(3)

धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा
×	2
धा तिं तिं ता	तिटकिट धातिर किटधा तिरकिट
0	3

(4)

धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा
×	2
धागे तूना किऽनग तिरकिऽ	धाऽ तिरकिट धा ऽ तिरकिट
0	3

पेशकार

धाक्र धाती धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
×	2
ताक्र ताती ताता तिंता	धाधी धाती धाधा धिंता
0	3

पल्टा (1)

धाक्र धाती धाक्र धाती	धाक्र धाती धाधा धिंता
×	2
धाक्र धाती धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
0	3
ताक्र ताती ताक्र ताती	ताक्र ताती ताता तिंता
×	2
धाक्र धाती धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
0	3

पल्टा (2)

धाक्र धाती धाक्र धिंता	धाक्र धाती धाधा धिंता
×	2
धाक्र धाती धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
0	3
ताक्र ताती ताक्र ताती	ताक्र ताती ताता
×	2
ताक्र ताती ताक्र ताती	ताक्र ताती ताता तिंता
0	3

पल्टा (3)

धाक्र धाती धाक्र धिंता	धाधा धिंता धाधा तिंता
×	2
धाक्र धाती धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
0	3
ताक्र ताती ताता तिंता	ताता तिंता ताता तिंता
×	2
धाक्र धाती धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
0	3

पल्टा (4)

धाधा धिंता धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
×	2
धाक्र धाती धाधा धिंता	धाती धाती धाधा धिंता
0	3
ताता तिंता ताता तिंता	ताती ताती ताता तिंता
×	2
ताक्र ताती ताता तिंता	धाती धाती धाधा धिंता
0	3

कायदा

धाति टधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
×	2
ताति टता तिट ताता	तिट धागे धिन गिन
0	3

पलटा

धाति टधा तिट धाधा	धाति टधा तिट धाधा
×	2
धाति टधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
0	3
तांति टता तिट ताता	तिट तता तिट ताता
×	2
ताति टता तिट ताता	तिट धागे धिन गिन
0	3

(2)

तिट धाति टधा तिट	तिट धाति टधा तिट
×	2
तिट धाति टधा तिट	तिट धागे तिन गिन
0	3
तिट ताति टता तिट	तिट ताति टता टित
×	2
तिट ताति टता तिट	तिट धागे धिन गिन
0	3

(3)

तिट तिट धाधा तिट	तिट धाधा तिट तिट
×	2
धाति टधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
0	3
तिट तिट ताता तिट	तिट ताता तिट तिट
×	2
ताति टता तिट ताता	तिट धागे धिन गिन
0	3

(4)

तिट तिट धाति टधा	तिट तिट धाधा तिट
×	2
धाति टधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
0	3
तिट तिट ताती टता	तिट तिट ताता तिट
×	2
तीति टता तिट ताता	तिट धागे धिना गिन
0	3

(5)

तिट तिट धाधा तिट	धाधा तिट धाधा तिट
×	2
धाति टधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
0	3
तिट तिट ताता तिट	ताता तिट ताता तिट
×	2
ताति टता तिट ताता	तिट धागे धिन गिन
0	3

(6)

धाधा तिट धाधा तिट	तिट तिट धाधा तिट
×	2
धाति तधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
0	3
ताता तिट ताता तिट	तिट धागे धिन गिन
×	2
ताति टता तिट ताता	तिट धागे धिन गिन
0	3

(7)

तिट धागे धिन गिन	तिट धागे धिन गिन
×	2
धाति तधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
0	3
ताति टता तिट ताता	तिट तागे तिन गिन
×	2
ताति टता तिट ताता	तिट धागे धिन गिन
0	3

(8)

धिन गिन धिन गिन	तिट धागे धिन गिन
×	2
धाति टधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन
0	3
तिन गिन तिन गिन	तिट तागे तिन गिन
×	2
ताति टता तिट ताता	तिट धागे धिन गिन
0	3

तिहाई

धाति टधा तिट धाधा	तिट धागे तिन गिन	धाऽ
×	2	0
धाऽ तिन गिन	धाऽ धागे तिन गिन	धाऽ
0	3	×

वादन सामग्री तिहाई

धाकृ धाती धाधा धिंता	धाती धाधी धाधा धिंता
×	2
धाधा धिंता धाऽ धांधा	धिंता धाऽ धाधा धिंता
0	3

कायदा :— दिल्ली घराना

मात्रा—16

धाति धागे नाधा तिरकिट	धाति धागे तिन गिन
×	2
ताति तागे नाता तिरकिट	धाती धागे धिन गिन
0	3

पल्टे

(1)	धाति धागे नाधा तिरकिट	धाति धागे नाधा तिरकिट
	×	2
	धाति धागे नाधा तिरकिट	धाति धागे तिन गिन
	0	3
	ताति तागे नाता तिरकिट	ताति तागे नाता तिरकिट
	×	2
	ताति तागे नाता तिरकिट	धाति धागे धिन गिन
	0	3
(2)	धाति धागे नाधा तिरकिट	धाधा तिरकिट धाधा तिरकिट
	×	2
	धाति धागे नाधा तिरकिट	धाति धागे तिन गिन
	0	3
	ताति तागे नाता तिरकिट	ताता तिरकिट ताता तिरकिट
	×	2
	ताति तागे नाता तिरकिट	धाति धागे धिन गिन
	0	3
(3)	धाधा तिरकिट धाधा तिरकिट	धाति धागे नाधा तिरकिट
	×	2
	धाति धागे नाधा तिरकिट	धाति धागे तिन गिन
	0	3
	ताता तिरकिट ताता तिरकिट	ताति तागे नाता तिरकिट
	×	2
	ताति तागे नाता तिरकिट	धाति धागे धिन गिन
	0	3

(4)

धाधा तिरकिट धाऽ ऽऽ	तिरकिट धातिर किटधा तिरकिट
×	2
धाती धागे नाधा तिरकिट	धाती धागे तिन गिन
0	3
ताता तिरकिट ताऽ ऽऽ	तिरकिट तातिर किटता तिरकिट
×	2
ताती तागे नाता तिरकिट	धाती धागे धिन गिन
0	3

(5)

तिरकिट धातिर किऽधा तिरकिट	धाती धागे नाधा तिरकिट
×	2
धाती धागे नाधा तिरकिट	धाती धागे तिन गिन
0	3
तिरकिट तातिर किटता तिरकिट	ताती तागे नाता तिरकिट
×	2
ताती तागे नाता तिरकिट	धाती धागे धिन गिन
0	3

तिहाई

धाती धागे धिन गिन	धाऽ ऽऽ धाती धागे	
×	2	
धिन गिन धाऽ ऽऽ	धाती धागे धिन गिन	धा
0	3	×

टुकड़ा (सादा)

धागे तूना किड़नग तिरकिट	तकता तिरकिट धाऽ किड़नग	
×	2	
तिरकिट तकता तिरकिट धाऽ	किड़नग तिरकिट तकता तिरकिट	धा
0	3	(×)

चक्करदार टुकड़ा

दिं दि तिटतिट धागेतिट तागेतिट | क्रधातिट धागेतिट
× 2
धातिरकिटधा तिटकत धाक्रत धाकत धाऽ दिं दिं | तिटतिट
0 3
धागेतिट तागेतिट क्रधातिट धागेतिट धातिरकिटधा तिटकत ×
धाकत धाकत धाऽ दिंदिं तिटतिट | धागेतिट तागेतिट
2 0
क्रधातिट धागेतिट | धातिंरकिटधा तिटकत धाकत धाकत | धा
3 ×

तीनताल सादापरन

धितधित धिटधिट धागेतिट तागेतिट
×
धागेतिट तागेतिट क्रधातिट धागेतिट
2
क्रधातिट धागेतिट धाऽ क्रधातिट
0
धागेतिट धाऽ क्रधातिट धागेतिट | धा
3 (×)

चक्करदार परन

धितधित धिटधिट धागेतिट तागेतिट
×
धागेतिट तागेतिट क्रधातिट धागेतिट
2
क्रधातिट क्रधातिट क्रधातिट धागेतिट
0
क्रधातिट धागेतिट धाऽ क्रधातिट
3
धागेतिट धाऽ क्रधातिट धागेतिट
×
धाऽ ऽऽ धिटधिट धिटाधिट
2
धागेतिट तागेतिट धागेतिट तागेतिट
0
क्रधातिट धागेतिट क्रधातिट क्रधातिट
3
क्रधातिट धागेतिट क्रधातिंट धागेतिट
×
धाऽ क्रधातिट धागेतिट धाऽ
2
क्रधातिट धागेतिट धाऽ ऽऽ
0
धिताधित धिटधिट धागेतिट तागेतिट
3
धागेतिट तागेतिट क्रधातिट धागेतिट
×
क्रधातिट क्रधातिट क्रधातिट धागेतिट
2
क्रधातिट धागेतिट धाऽ क्रधातिट

0
धागेतिट धाऽ क्रधातिट धागेतिट धा
3 (×)

(1)

रूपक कायदा

धागे तिट तिट	धेना धागे	तिन गिन
×	2	3
तागे तिट तिट	केना धागे	धिन गिन
×	2	3

पल्टा नं. (1)

धागे तिट तिट	धागे तिट	तिट धागे
×	2	3
धेना तिट तिट	धेना धागे	तिन गिन
×	2	3
तागे तिट तिट	तागे तिट	तिट तागे
×	2	3
केना तिट तिट	धेना धागे	धिन गिन
×	2	3

पल्टा (2)

तिट तिट धागे	तिट धागे	तिट तिट
(×)	2	3
धागे तिट तिट	धेना धागे	तिन गिन
×	2	3
तिट तिट तागे	तिट तागे	तिट तिट
×	2	3
तागे तिट तिट	केना धागे	धिन गिन
×	2	3

पल्टा (3)

धागे तिट धागे	तिट धागे	तिट तिट
×	2	3
धागे तिट तिट	धेना धागे	तिन गिन
×	2	3
तागे तिट तागे	तिट तागे	तिट तिट
×	2	3
तागे तिट तिट	केना धागे	धिन गिन
×	2	3

पल्टा (4)

धागे धिन गिन	तिट धागे	धिन गिन
×	2	3
धागे तिट तिट	धेना धागे	तिन गिन
×	2	3
तागे तिन गिन	तिट तागे	तिन गिन
×	2	3
तागे तिट तिट	केना धागे	धिन गिन
×	2	3

पल्टा (5)

धिन गिन धिन	गिन तिट	धिन गिन
×	2	3
धागे तिट तिट	घेना धागे	तिन गिन
×	2	3
तिन गिन तिन	गिन तिट	तिन गिन
×	2	3
तागे तिट तिट	केना धागे	धिन गिन
×	2	3

तिहाई

धेना धागे धिन	गिन धाऽ	धेना धागे
×	2	3
धिन गिन धाऽ	धेना धागे	धिन गिन
×	2	3

रूपक कायदा (2)

धागे नाधा तिरकिट	धाती धागे	तिन गिन
×	2	3
तागे नाता तिरकिट	धाती धागे	धिन गिन
×	2	3

पल्टा (1)

धागे नाधा तिरकिट	धाधा तिरकिट	धिन गिन
×	2	3
धागे नाधा तिरकिट	धाती धागे	तिन गिन
×	2	3
तागे नाता तिरकिट	ताता तिरकिट	तिन गिन
×	2	3
तागे नाता तिरकिट	धाती धागे	धिन गिन
×	2	3

(2)

धाधा तिरकिट धागे	नाधा तिरकिट	धिन गिन
×	2	3
धागे नाधा तिरकिट	धाती धागे	तिन गिन
×	2	3
ताता तिरकिट तागे	नाता तिरकिट	तिन गिन
×	2	3
तागे नाता तिरकिट	धाती धागे	धिन गिन
×	2	3

(3)

धाधा तिरकिट धाधा	तिरकिट धागे	नाधा तिरकिट
×	2	3
धागे नाधा तिरकिट	धाती धागे	तिन गिन
×	2	3
ताता तिरकिट ताता	तिरकिट तागे	नाता तिरकिट
×	2	3
तागे नाता तिरकिट	धाती धागे	धिन गिन
×	2	3

पल्टा (4)

धातिर किटधा तिरकिट	धाधा तिरकिट	धिन गिन
×	2	3
धागे नाधा तिरकिट	धाती धागे	तिन गिन
×	2	3
तातिर किटता तिरकिट	ताता तिरकिट	तिन गिन
×	2	3
तागे नाता तिरकिट	धाती धागे	धिन गिन
×	2	3

तिहाई

धागे नाधा तिरकिट	धाधा धाधा	गेना धातिर	
×	2	3	
किट धाधा धाधा	गेना धातिर	किट धाधा	ती
×	2	3	(×)

अध्याय–4

लय

संगीत में लय का स्थान

लय : संगीत में प्रत्येक क्रिया के बाद के समान विश्रान्ति को लय कहते हैं।
सामान्य भाषा में इसे गति भी कहा जा सकता हैं। आचार्य भरत ने लय के सन्दर्भ में लिखा है।

ततः कला कालकृतो लय कृत्यभिसंज्ञितः।
त्रयो लायस्तु विज्ञेया द्रुत मध्यविलम्बिताः।।

(नाट्यशास्त्र : 31/5)

उपरोक्त श्लोक की टीका करते हुए अभिनव गुप्त ने कलाओं के मध्य स्थित कला की विश्रान्ति युक्त क्रिया को लय कहा है। अर्थात् बिना रूके काल की क्रिया नहीं की जा सकती।

"आचार्य भरत ने लय के सम्बन्ध में ताल विधि का लक्षण देते हुए कहा हैं कि– "यदन्तरं कालपरिणामं तत् तात्यतेऊनाधिकमावं गम्यते येषु गुरुलधुषु तेषु ते पद (त) संज्ञाः पादे : (ते) सव्यवहार उभयकरनिपतनस्वभावात् संज्ञा अत इतिद्योत्यते (न्ते)[1]

अर्थात् विश्रान्ति से जिस प्रकार छन्द के अक्षरों में समान काल प्रयुक्त होने से लय बनती है उसी प्रकार के काल के अक्षर, पद तथा सम्पूर्ण वाद्य में समान काल की विश्रान्ति से लय बनती हैं।

अभिनव ने भी ताल कलाओं के मध्य विश्रान्ति से लय का अर्थ लिया हैं। और विश्रान्ति घटने या बढ़ने से लय में विविधता आती है और इसी विविधिता को तीन प्रकार में बाँटा जा सकता है।

विलम्बित, मध्य, द्रुत

1. **विलम्बित लय** – मध्य लय की ठीक दोगुनी विश्रान्ति अर्थात् धीमी लय को विलम्बित लय कहते हैं।

2. **मध्य लय** – विलम्बित लय की दुगुनी तेज लय अथवा द्रुत लय से दुगुनी विश्रान्ति वाली लय को मध्य लय कहते है।

विलम्बित लय व द्रुत लय के दो प्रकार और प्रचलित हैं।

1. **अतिविलम्बित लय** – विलम्बित लय की और अधिक विश्रान्ति वाली लय या धीमी लय को अतिविलम्बित लय कहा जाता है ।

2. अति द्रुत – द्रुत लय की दुगुनी कम विश्रान्ति वाली लय को द्रुत लय से ज्यादा तेज लय को द्रुत लय कहते हैं।

लय का जीवन में उपयोग –

सामान्य जीवन में यदि हम महसूस करें तो पायेंगे कि जन्म से लेकर मरण तक हमारे हर कृत्य

1. भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र : अभिनवगुप्ताचार्य की टीका अभिनव भारती सहित : भाग – 4, 31/36 पृ0 166, परिमल संस्कृत ग्रन्थमाला संस्करण (प्रधान सम्पादक डा0 रविशंकर नागर)

में लय विद्यमान हैं। बच्चा जन्म लेते ही एक लय में ही रोता हैं यदि ना रोए तो चिकित्सक घबरा जाते हैं। और मरते समय राम का उद्घोष भी एक लय में शंख की घण्टों की ध्वनि सभी एक लय बहुता का प्रमाण हैं। सामान्य भाषा में लय को दो अर्थों में जाना जाता है। एक अर्थ में तो लय को शाब्दिक अर्थ से पहचाना जाता हैं अर्थात् लीन हो जाना या किसी भाव से एकाकार कर लेना । दूसरे अर्थ में काल मापने के एक मात्र साधन लय ही हैं। लय को गति भी कहा जाता है।

प्राकृतिक रूप में यद्यपि हम दृष्टिपात करें तो पायेंगें चन्द्र, नक्षत्रों, पृथ्वी सभी क्रियाओं की अपनी—अपनी लय निश्चित है। पृथ्वी अपनी एक निर्धारित लय में सूर्य की परिक्रमा कर रही हैं। जरा भी लय में शिथिलता या तीव्रता विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का कारण बनती हैं। एक निश्चित लय के कारण ही समय पर पूर्णिमा, अमावस्या विधिवत रूप से आती रहती हैं। समय—समय पर ऋतुओं का बदलाव, रात, दिन की निश्चित लय से पृथ्वी के घूमने के कारण ही संभव है और इसी लय से पशु पक्षियों का जीवन भी बंधा हुआ है। मुर्गे को एक लय का अहसास हैं इसलिये वह सुबह को बांग देता है वह समझ जाता हैं सुबह हो गयी है पक्षी चहचहाने लगते हैं। मनुष्यों को घड़ी की टिक—टिक से जानकारी होती हैं घड़ी की टिक—टिक में भी एक लय है जरा भी टिक—टिक की लय कम होती है हम समझ जाते हैं कि घड़ी खराब हो गयी हैं। हमारी श्वसन क्रिया, हृदय के धड़कने तथा चलने फिरने, दोड़ने, बोलने सभी में एक लय हैं। श्वसन क्रिया जरा सी बिगडती हैं हमें दमा रोग की शिकायत हो जाती हैं। हृदय के धड़कने की लय अनिश्चित हुई नहीं कि हृदयाधात का डर सताने लगता है। जब हम समान गति से चलते हैं तो हमारी एक लय होती है जब हम दौड़ते तो भी हमारी गति अथवा लय एक सी होती हैं ऐसा नहीं होता कि हम कुछ देर दौड़ते हो व कुछ देर चलते हो या एक कदम भागकर या एक कदम चल कर अपनी दूरी तय करते हो। बोलते समय यदि किसी व्यक्ति की लय बिगड़ती हैं तो वह हकले की श्रेणी में आता हैं। आँखों की दोनों पुतली यदि एक लय या गति में नहीं घूमती तो आँखों में भैंगापन का रोग हो जाता है। हमारे शरीर का प्रत्येक अंग एक गति में कार्यरत है। भोजन करते ही पाचन तंत्र अपनी गति से भोजन को पचाने का कार्य करने लगता हैं जरा भी पचाने की क्रिया की गति रूकती हैं कि हमारा पाचन तंत्र गड़बड़ा जाता हैं। इसके अतिरिक्त छोटे बच्चे का एक लय से हिलता पालना उसे सुलाने में सहायक होता है। रेखागणित के द्वारा यह तथ्य स्पष्ट होता हैं कि ध्वनि और लय के व्यवस्थित प्रयोग द्वारा बड़े—बड़े लोहे के पुल, शीशा, दीवार इत्यादि को तोड़कर चूर—चूर किया जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लय या गति ईश्वर प्रदत्त नैसर्गिक क्रिया हैं और सच कहे तो लय अथवा गति ईश्वरीय अभिव्यक्ति का आधार हैं।

सक्षिप्त सार

लय ही जीवन हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

विस्तृतीयः—

1. लय किसे कहते हैं ? समझाइये।
2. लय का जीवन में क्या स्थान हैं? उदाहरण सहित समझाइये।

लघूत्तरीयः—

1. लय कितने प्रकार की होती हैं ?

अति लघुत्तरीयः—

1. लय बिना संगीत है ?
   (क) सम्भव (ख) असम्भव
2. लय कितने प्रकार की होती हैं ?
   (क) 2 (ख) 1 (ग) 3 (घ) 4

अध्याय–5

कलाकारों की जीवनी

अहमद जान थिरकवा

अहमद जान थिरकवा का जन्म मुरादाबाद उ0प्र0 में लगभग सन् 1874 में हुआ। जन्म लेने के सन् की सटीक पुष्टि नहीं की जा सकती क्योंकि जन्म सम्बन्धी कोई भी साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।

आप तबला वादकों के घर के ही वंशज थे। आपके नाना बाबा कलंदर बख्श और उनके भाई इलाही बख्श (नाटोरी वाले), बोली बख्श, करीम बख्श, सभी मुरादाबाद के प्रसिद्ध तबला वादक थे। अहमद जान के चाचा शेर खाँ, मामा फैयाज खाँ, बसवा खां और फजंली खां प्रसिद्ध तबला नवाज़ थे । लेकिन आपकी तबला की शिक्षा दीक्षा मेरठ निवासी मुनीर खाँ से हुई। थिरकवा को लखनऊ, मेरठ, अजराड़ा फर्रुखाबाद आदि सभी धरानों का बाज याद था, किन्तु विशेष रूप से आप दिल्ली और फर्रुखाबाद का बाज बजाने में सिद्धहस्त थे। आपका स्वतंत्र वादन जितना प्रभावशाली था उतना ही प्रभाव शाली थी संगति वादन।

बाल्यकाल से आपकी उँगलियाँ एक विशेष प्रकार से तबले पर थिरका करती थी जिस कारण इनका नाम थिरकृ पड़ा। ऐसी एक किवदन्ति है कि बचपन में नटखट होने के कारण थिरकवा नाम आपके उस्ताद मुनीम खां के पिता उ. काले खां द्वारा दिया गया था।

सन् 1970 में भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण के अलंकरण से विभूषित किया था। तबले के इस जादूगर का देहान्त लखनऊ में 13 जनवरी 1976 को हो गया।

सन्दर्भ – 1 हमारे संगीत रत्न पुस्तकें 2. ताल प्रकाश

अभ्यासार्थ प्रश्न

विस्तृतीय प्रश्न

1. अहमद जान थिरकवा का जीवन परिचय लिखो।

लधूत्तरीय–

1. अहमद जान थिरकवां का जन्म कहां हुआ था ?
2. अहमद जान थिरकवा के गुरु का क्या नाम था ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सही उत्तर पर सही का चिन्ह लगाओ)

1. अहमद जान थिरकवा का घराना था ।

   1. दिल्ली 2. पंजाब 3. लखनऊ

2. अहमद जान थिरकवा अलंकरित किया गया था।

   1. भारत रत्न 2. पद्मभूषण 3. पद्म श्री

134

अल्लारखां

अल्लार खा का जन्म सन् 1915 ई0 में रतनगढ़ (गुरदासपुर) में हुआ। आप कृषक परिवार से थे। आपके पिता का नाम हाशिमअली था। बाल्यकाल से ही संगीत के प्रति विशेष रुचि रखने के कारण पन्द्रह वर्ष की आयु में अपने एक नाटक कम्पनी में नौकरी कर ली और यहीं पर आपकी उस्ताद कादिर बख्श से मुलाकात हुई। तदुपरान्त आपने इनका शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। अपने कुछ समय तक आकाशवाणी केन्द्र दिल्ली व लाहौर से तबला वादन किया । इसके पश्चात् 1937 ई0 में अपने बम्बई की तरफ पदार्पण कर, आकाशवाणी बम्बई में नौकरी कर ली। आपने फिल्म क्षेत्र में भी कार्य किया।

पंजाब धराने के सिद्धहस्त कलाकार अल्लार खां का स्वतन्त्र वादन के साथ – साथ संगीत पक्ष भी बहुत बेमिसाल था। तन्त्र वाद्यों की संगति करते समय सवाल–जबाव करने की कला बहुत अद्भुत थी। आपने वर्षों तक सितार के पर्याय पं. रवि शंकर के साथ संगति की। आपके तबला वादन व संगति के अनेकों एल.पी. रिकार्डस व ऑडियों कैसेट् निकल चुके हैं।

3 मार्च सन् 2000 बेला को उ0 अल्लार खां इस संसार को छोड़ परमात्मा में विलीन हो गये।

अध्याय–6

तबले का संगीत में स्थान

भारतीय संगीत में गायन का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। वादन तथा नृत्य का कार्य गीत की सौन्दर्य वृद्धि करना है इसलिए वाद्य को गीत का अनुगामी कहा गया है। ताल वाद्य संगीत में लय दिखाकर समय का सही सही लेखा जोखा रखते है। अतः गायन का अनुगामी होने के कारण गायन की परिवर्तित दशाओं के प्रभाव से वाद्यों का युग अछूता नहीं रह सका। वाद्यों का आविष्कार मुख्यतः संगति के लिए हुआ। गायन की ध्रुपद धमार शैली के युग में ध्रुपद धमार की संगति पखावज के द्वारा की जाती थी किन्तु खयाल गायकी के आगमन के साथ ही साथ अन्य वाद्य की आवश्यकता हुई। क्योंकि ख्याल भाव प्रधान गायकी है और पखावज धीर गम्भीर वाद्य। अतः ख्याल की संगति के लिए तबले का प्रयोग किया गया जिन मात्राओं में गायन या सितार वादन किया जाता था उन्हीं मात्रा की तालों के ठेकें तबले पर बजाये जाने लगा।

किसी भी वाद्य का मूल्यांकन दो प्रकार से कर सकते हैं। (1) ख्याति की दृष्टि से (2) कला की सूक्ष्मता की दृष्टि से ।

ख्याति की दृष्टि से तबला सभी वाद्यों में श्रेष्ठ है और किसी वाद्य की श्रेष्ठता उसके उपयोग के लिए उस कला के प्रयोग की सूक्ष्मता पर विचार करना होगा।

सर्वप्रथम यहाँ अब तबले के संगति पक्ष का अवलोकन करेंगे।

संगति वादन : संगति का अर्थ है सह अनुगामी या अनुसरण करने वाला। अर्थात् संगत का उद्देश्य गायन या वादन के काल मापन हेतु आधार प्रधान करना है। तबला संगति का वाद्य है वर्तमान में अनेक गायन शैलियाँ प्रचलित हैं जिन पर तबले से संगति की जा रही है।

अतः तबले के द्वारा गायन की संगति को हम निम्न भागों में बाँट सकते है।

(1) शास्त्रीय संगीत – ध्रुपद, धमार, विलम्बित एवं द्रुत ख्याल तराना आदि।
(2) उपशास्त्रीय – ठप्पा, ठुमरी, कजरी, चैती आदि।
(3) सुगम संगीत – गीत भजन, गजल, कब्वाली आदि।

उपरोक्त के अतिरिक्त संगति करने के दो और क्षेत्र है लोक संगीत और फिल्म संगीत।

1. शास्त्रीय संगीत –

ध्रुपद एवं धमार की संगति – यह सबसे प्राचीन गायन शैली है। सर्वप्रथम इसकी संगति पखावज से की जाती थी किन्तु आज तबले पर खुली रीति से तबला बजाकर ध्रुपद धमार की संगति की जाती है। इसकी संगति में चारताल, सूलताल, तीवरा लक्ष्मी, गणेश आदि तालों का प्रयोग किया जाता है। किन्तु ध‍मार की संगति धमार ताल के वादन द्वारा की जाती है किन्तु तबले की संगति पखावज की संगति के

अनुकूल नहीं लगती, इस कारण चौड़े मुखार के तबले का प्रयोग किया जाता है तथा वादन भी पखावज के अंग से किया जाता है।

विलम्बित ख्याल – इन गायन शैलियों की संगति एकताल, तीनताल, तिलवाड़ा, झूमरा आऽाचारताल आदि तालों में की जाती है। इस क्षेत्र में वादक मुखड़े का प्रयोग कर सम पकड़ता है।

द्रुत ख्याल – इसे छोटा ख्याल भी कहते है। यह मुख्यतः तीनताल, एकताल, झपताल, रूपक आदि तालों में गाये जाते है। इसमें गायक की बोल तानों की गति व वजन के अनुसार ही बोल बजाकर सवाल जवाब की संगति की जाती है।

तराने की संगति – यह प्रथम द्रुत लय में गाया जाता है। इसकी संगति तीनताल, एकताल आदि में की जाती है।

2. उपशास्त्रीय संगीत –

ठप्पा गायन की संगति –

यह पंजाब की श्रृंगार प्रधान गायकी है। इसकी संगति त्रिवट, तीव्रा, झूमरा आदि तालों में की जाती है।

ठुमरी की संगति – यह गायकी विलम्बित लय से प्रारम्भ होकर द्रुत गति तक जाती है। इस प्रकार ठुमरी दो प्रकार से गायी जाती है। (1) विलम्बित लय में (2) द्रुत लय में । इसकी संगति हेतु दीपचंदी, झपताल, पंजाबी, कहरवा दादरा आदि ताले प्रयोग में ली जाती है।

दादरा की संगति – यह ठुमरी के समान ही गायकी है। इसकी संगति हेतु कहरवा ताल प्रयोग में लायी जाती है। तथा संगति मे भराव के लिये लग्गी व लड़ियों का प्रयोग किया जाता है।

कजरी चैती – इस गायन शैली की संगति हेतु भी कहरवा, दादरा ही प्रयोग में लायी जाती है। इसकी संगति ठुमरी आदि के समान की जाती है।

3. सुगम संगीत – इस गायन शैली में गीत, भजन, गजल, लोक संगीत गाया जाता है। इसमें झपताल, रूपक, कहरवा, दादरा, दीपचन्दी आदि तालों का प्रयोग किया जाता है।

फिल्म संगीत – तबले का सफलता पूर्वक प्रयोग फिल्म संगीत में दिखाई दे रहा है। चाहे सुगम संगीत हो, शास्त्रीय या उपशास्त्रीय विधा सभी जगह फिल्म संगीत में तबला बड़ी कुशलता व चमत्कारिक ढंग से प्रयोग में लाया जा रहा है।

वादन की संगति – इस क्षेत्र को दो भागों में बांटा जा सकता है।

1. भिजराव से बजाये जाने वाला तन्त्र वाद्य
2. गज से बजाये जाने वाले वाद्य

1. मिजराव से बजाये जाने वाले वाद्य :
इस श्रेणी में सितार, दिलरूबा, वीणा आदि वाद्य आते हैं। इनकी संगति भी सर्वप्रथम विलम्बित लय से द्रुत लय की ओर अग्रसर होती है।

2. गज से बजाने वाले वाद्य –
इसमें सारंगी व वायालिन आदि वाद्य आते हैं तन्त्र वाद्यों की संगति मुख्यत : दो प्रकार से की जाती है सर्वप्रथम जोड़ा लाप गत व झाला बजाकर तन्त्रकार वादन करता है। उसी के साथ तबलावादक उठान बजाकर सम पर मिलता है या बीच–बीच में सितार वाले के समान लय कारी के बोल बजाकर सम पर मिलता है।

दूसरी संगति ''लडन्त की बाज'' कहलाता है। इसमें तन्त्रकार कुछ बोल बजाकर वादक से तबले पर जबाव मांगता है।

अन्त में झाला बजाकर दोनों ही प्रकार की संगति में तन्त्रवादक व तबला वादक साथ–साथ तिहाई बजाकर वादन समाप्त करते है।

नृत्य संगति –
नृत्य की संगति अपने आप में बिलकुल अनूठी है इसमें तबला वादक नृत्यकार के बोलों के वजन के बोल तबले पर बजाता जाता है ओर साथ ही लयकारी पर विशेष ध्यान देता है। नृत्यकार के साथ संगति वहुत ही जोरदारी से तबला वादन कर की जाती है।

संगति की इन विधाओं के अतिरिक्त तबले का अपना स्वतन्त्र वादन का भी क्षेत्र है जिसमें छः धराने दिल्ली, अजराडा, फर्रुखाबाद लखनऊ बनारस व दिल्ली हैं। इन सभी धरानों की अपनी विशिष्ट शैली है इन शैली में वादन करते समय में हारमोनियम या सारंगी से नगमा दिया जाता हैं।

वर्तमान में एक ही तबला वादक के वाद्य में विभिन्न घरानों की झलक दिखाई देती है वादन के दौरान वह सभी बाजों का कुशलता से निर्वाह भी करता है।

अतः तबले का वर्तमान युग में सभी वाद्यों में सर्वोच्च स्थान है क्योंकि इसका स्वतन्त्र व संगति पक्ष अत्यन्त प्रबल है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

विस्तरीय

प्रश्न 1. गायन की विभिन्न शैलियों के साथ संगति किस प्रकार की जाती है ? समझाइये।

लघूत्तरीय

प्रश्न 2. वादन की संगति कैसे की जाती है? समझाइये।

अति लघु उत्तरीय सही उत्तर पर ✓ लगाइये

`प्रश्न 3 ध्रुपद व धमार गायन शैली है

(क) उपशास्त्रीय (ख) शास्त्रीय (ग) सुगम

प्रश्न 4 ठप्पा गायन शैली है।

(क) शास्त्रीय (ख) उपशास्त्रीय (ग) सुगम

प्रश्न 5 तबले के घराने हैः–

(क) 4 (ख) 3 (ग) 6

उत्तरमाला

अध्याय 1
अति लघूत्तरीय
प्र0 1 ग प्र0 2 ग
अध्याय 2
अति लघूत्तरीय
प्र0 1 घ प्र0 2 क
अध्याय 3
अति लघूत्तरीय
प्र0 1 ख प्र0 2 ग
अध्याय 5(क)
अति लघूत्तरीय
प्र0 1 क प्र0 2 ख
अध्याय 5(ख)
अति लघूत्तरीय
प्र0 1 ख प्र0 2 ग
अध्याय 6
अति लघूत्तरीय प्रश्न
प्र. 3 ख प्र. 4 ख प्र. 5 ग